एनूं एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही।
घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना।। २० ।।

जो भी एक वचन का विचार कर लेगा वह तुरन्त ही घर की पहचान कर लेगा। अपने घर की जो वासना होगी (आत्मा होगी) वह रास के वचनों को नहीं छोड़ेगी (ब्रज से रास में जाते समय का ढंग नहीं छोड़ेंगे)।

खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही।
जेम कह्यूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम।। २१ ।।

जो अपनी परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी, वह रास के वचन को अमल में लाएगी। माया छोड़ने का जो रास्ता बताया है, उस रास्ते पर चलेगी। वही तारतम का फल लेगी।

इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास।
प्रकास करीने लेजो धन, जे हूं तमने कह्या वचन।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे साथ! सुनो, इन वचनों से ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान से अपना धन (परमधाम और वालाजी) लेना। इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०१२ ।।

गुणनी आसंका

हवे कांईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुए ओचरूं।
वली एक कहूं वचन, रखे आसंका आवे मन।। १ ।।

अब तो मैं कुछ अपनी कहती हूं। नहीं तो तुमको अधिक समझाना पड़ेगा। दुबारा एक वचन कहती हूं, जिससे तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं।

में धणीतणा गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई।
जे ऊंडा वचन कह्या निरधार, साथ केम करसे विचार।। २ ।।

धनी के गुण लिखते समय मेरे मन में एक संशय हुआ कि जो गहरे वचन मैंने कहे हैं, उनका सुन्दरसाथ विचार कैसे करेगा?

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रबोध दीजे दस लाख।
एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने।। ३ ।।

जब तक जीव को भरोसा नहीं हो जाता, तब तक दस लाख बार समझाएं, क्या होगा? जब तक जीव मन से समझ नहीं लेगा, तब तक एक वचन का भी असर नहीं होगा (चोट नहीं लगेगी)।

ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने।
एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अर्थ नव लहे।। ४ ।।

इस वास्ते मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें किसी प्रकार का संशय न रह जाए। वैसे तो माया के जीव भी मुख से कहते हैं, पर वह उनके अर्थ (मायने) नहीं समझते।

Nijanand App

सोयतणां नाका मंझार, कुंजर कई निकले हजार।
एनो अर्थ पण आवसे सही, तारतम आसंका राखे नहीं।। ५ ।।

कहा जाता है कि सुई की नोक में से हजारों हाथी निकल गए। इसका अर्थ भी तुमको समझ में आ जाएगा। तारतम से सब संशय मिट जाते हैं।

में गुण लखतां कही लेखण अणी, रखे आसंका उपजे घणी।
कथुआना पगना प्रमाण, लेखणो गढियो हाथ सुजाण।। ६ ।।

धनी के गुणों को लिखते समय मैंने लेखनी की नोक का वर्णन किया है और तुमको सन्देह न रहे इसलिए कथुआ के पैर का प्रमाण दिया है। जिसके पैर के समान मैंने लेखनी की पतली नोक बनाई।

तेह तणी वली कीधियो चीर, गुण जेटली उतारी लीर।
हवे रखे केहेने आसंका रहे, तारतम आसंका नव सहे।। ७ ।।

उसको भी बीच में से चीरा (दो भाग किए)। अब किसी को संशय न रहे, क्योंकि तारतम वाणी से किसी के संशय बाकी रहते ही नहीं।

ते ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा सिरदार।
आ चौद भवन देखो आकार, एहेना मूलनो करो विचार।। ८ ।।

इसके ऊपर भी एक विचार बताती हूं। हे मेरे प्रमुख सुन्दरसाथ! सुनो, तुमको यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जो दिखाई देता है, इसके आकार को देखो और इसकी जड़ को पहचानो।

एणे सुकजी पण सुपनांतर कहे, कोई एहनो जीव एणे नव लहे।
ए सुपन मूलतां छे समरथ, एहेना मूलनो जुओ अर्थ।। ९ ।।

इसको शुकेदवजी भी स्वप्न का ब्रह्माण्ड कहते हैं, परन्तु इस ब्रह्माण्ड के जीव इसका पार नहीं पाते। इस स्वप्न के ब्रह्माण्ड का मूल (नींद है) समर्थ है। इसके मूल के अर्थ को देखो।

सुपन मूलतां निद्रा थई, जुए जागीतां कांइए नहीं।
एनूं मूलतां न रह्यो लगार, अने कथुवाना पगनो तो कह्यो आकार।। १० ।।

स्वप्न का मूल तो निद्रा है जो जागने पर नहीं रह पाता। इस तरह से इसका मूल तो कुछ है ही नहीं, पर कथुए के पैर के आकार की कही है।

मूल विना तमे जुओ विस्तार, केवडो कीधो छे आकार।
तो आनो तो हूं कह्यो आकार, तेहेनो कां नव थाय विस्तार।। ११ ।।

यह ब्रह्माण्ड मूल के बिना इतना बड़ा आकार लेकर खड़ा है। तुम देखो। फिर कथुए के पैर का तो मैंने आकार बताया है, तो फिर इसका विस्तार क्यों न हो?

एम सोयतणां नाका मंझार, ब्रह्मांड कई निकले हजार।
हवे एह तणो जो जो अर्थ, गुण लखवा वालो समरथ।। १२ ।।

इस तरह सुई की नोक में से हजारों ब्रह्माण्ड निकल गए। इसका तुम अर्थ समझो और देखो। इन गुणों को लिखने वाला हर तरह से समर्थ है।

Nijanand App

हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहजो निरधार।
हेत करीने कहूं छूं साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ।। १३ ।।

अब इसका विस्तार तुम्हें मैं कहां तक कहूं? इस एक वचन को ग्रहण करना जिसे मैं तुम्हें, हे सुन्दरसाथ! अपना समझकर प्यार से कहती हूं। इन सबका सार एक वचन यह है कि अपने प्राणनाथ को पहचानो।

गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह।
इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए।। १४ ।।

वही प्राणनाथ गुण लिखने वाले हैं। यह अपने बीच में बैठे हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि सुन्दरसाथजी! आओ जिन प्राणनाथ ने अपने ऊपर इतनी मेहर (कृपा) की है, यह वही तुम्हारे प्राणनाथ हैं।

तारे केहेवुं होय ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होय ते ले रे ले।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां।। १५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब तुम्हें जो कहना हो वह कहो। लाभ लेना हो, तो लो। तारतम वाणी कहती है, यही अपने प्राणनाथ हैं। मैं भी हजार बार स्वीकार करती हूं।

मायासूं करजे नां रे नां, फोकट फेरो मा खा रे खा।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा।। १६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब माया को नाकारा कर दो (छोड़ दो)। व्यर्थ में आवागमन के चक्कर से बचो। धनी के चरणों में जाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

जो चूक्यो आंणें ता रे ता, तो कपालमां लागसे घा रे घा।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा।। १७ ।।

हे साथजी! यदि तुम ऐसा अवसर चूक गए तो समझो तुम्हारे माथे में बड़ी चोट लगेगी (बहुत बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा)। इस संसार में कोई वस्तु सार (सत्य) नहीं है. इसलिए धाम धनी के गुण गाओ।

पोताना पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह।
तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूंने वाह रे वाह।। १८ ।।

हे साथजी! अपने आपको अपने रास्ते पर लाओ और अपनी चाहना धनी से अलग मत करो। अपने जीव को धनी का प्रेम प्राप्त कराओ (अपने जीव से धनी के साथ प्यार कर) जिससे तुम्हें सब कोई 'वाह-वाह' कहे।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०३० ॥

गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसूं कीधां अति घणा जी।
आणां जोगवाई ने आणी जिभ्याए, केम केहेवाय वचन तेह तणा जी।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! आपके गुणों का (मेहर का) जो आपने मेरे से किए हैं, कहां तक बयान करूं (मेरे पर मेहेर की)। इस तन से तथा इस जबान से उन गुणों को वचनों में कैसे कहा जाए?

वृज तणा सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणा दीधां जी।
रास तणी रामतडी रमाडी, आप सरीखडा कीधां जी।। २ ।।

ब्रज के सुख यहां आकर हमको बहुत ज्यादा दिए। रास की रामत खिलाकर अपने समान बना लिया।

Nijanand App